पुलिस की गोलियों से शहीद

मलविन्दर जीत सिंह वढ़ैच•

आजाद अपनी शहीदी, 27 फरवरी 1931, से लगभग 15 दिन पहले पं. जवाहर लाल नेहरू को उनके इलाहाबाद वाले घर पर जाकर मिले थे।

पं. जवाहर लाल नेहरू अनुसार, "मुझे एक अनोखी घटना याद है जिससे मुझे हिंसावादी पार्टी की मानसिक सोच का अनुभव हुआ। एक अंजान नौजवान हमारे घर आया और उसने मुझे बताया कि वह चन्द्रशेखर आजाद है। मैंने उसे कभी देखा तो नहीं था, किन्तु मुझे लगभग दस वर्ष पूर्व 'असहयोग आन्दोलन' के दौरान उस द्वारा झेली गई 15 कोड़ों की सजा की गाथा याद थी। बाद में वह क्रांतिकारी बन गया था, और वह उत्तरी भारत में विख्यात नेताओं में से एक था, किन्तु मैंने कभी इस तरफ ध्यान नहीं दिया था। मैं उसके आने पर हैरान-सा हुआ था।

"वह मुझसे यह जानने के लिए आया था कि जल्दी ही जो कांग्रेस व सरकार के मध्य समझौता वार्ता होने जा रही है उसमें क्या हमारे लिए भी किसी रियायत की संभावना है? अथवा चोरों व डाकुओं की भांति पुलिस हमारे पीछे ही पड़ी रहेगी? क्या हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शांतिपूर्वक ढंग से काम करने का अवसर दिया जाएगा?

"उसने मुझे अपने व अपने साथियों की ओर से भरोसा दिलाया कि उनकी आज यह धारणा है कि बिल्कुल हिंसक कार्रवाइयों का कोई भविष्य नहीं दिखाई दे रहा है, यद्यपि वह यह मानने को तैयार नहीं था कि पूरे अहिंसक ढंग के साथ आजादी मिल जाएगी। उसने माना कि जैसे वह अब हिंसक नीति से किनारा करने के लिए तैयार है, किन्तु, यदि उनके लिए कोई दूसरा विकल्प न रहा तो वे फिर अपनी सुरक्षा के लिए पहले की भांति ही अपनी गतिविधियों को जारी रखने के लिए मजबूर होंगे।

"15-20 दिनों के उपरांत, जब गांधी-इरवन वार्ता चल रही थी, तो मैंने दिल्ली में सुना कि चन्द्रशेखर आजाद को इलाहाबाद में पुलिस ने मार दिया है। उसको पुलिस ने दिन-दिहाड़े पार्क में बैठे हुए को पहचान लिया था, जिस करके बड़ी संख्या में पुलिस ने उसको घेर लिया था, जिस पर उसने एक पेड़ का आड़ लेते हुए पुलिस पर गोलियाँ चलाई। इस परस्पर गोलीबारी में एक-दो पुलिस वाले भी घायल हुए।" (– *आत्मकथा: पंडित जवाहर लाल नेहरू*)

आजाद के इकलौते बचे नजदीकी साथी वैशम्पायन की 12 फरवरी को हुई गिरफ्तारी आजाद के लिए तो सबसे बड़ी चोट थी। अब ले-देकर उसकी टेक सुखदेव राज पर थी, जबकि उसे भी आजाद के इलाहाबाद में स्थित ठिकाने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इन परिस्थितियों में 27 फरवरी को सवेरे लगभग 10 बजे आजाद ने सुखदेव राज (वासी दीनानगर, गुरदासपुर) को अल्फ्रेड पार्क में मिलने के लिए बुलाया हुआ था। जिकरयोग्य है कि उन दिनों 'चांद' रसाले के देशभक्त संपादक, रामरक्ख सिंह सहगल ने उसका लिहाज करते हुए उसे अपने दफ्तर में अच्छे वेतन पर 'प्रूफ रीडर' के पद पर नियुक्त कर रखा था।

सुखदेवराज के अनुसार:–

> "आज़ाद की मानसिक परिस्थिति उस समय अत्यन्त गंभीर थी। साथियों का भरोसा नहीं, जिनका भरोसा था वे धीरे-धीरे पकड़े जा रहे थे। वीरभद्र और यशपाल क्या खेल, खेल रहे थे यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था। यह स्थिति थी उनकी 27 फरवरी की सवेरे तक जब मैं उनसे मिलने गया था।
>
> "आज़ाद मुझे पार्क से बाहर ही मिले। जब हम दोनों पार्क में घुसे तो हमें एक व्यक्ति पुलिया के ऊपर बैठा दातुन करता दिखाई दिया। उसने बड़ी गौर से आज़ाद की ओर देखा। मैंने उसे घूरा। आज़ाद से मैंने उसके बारे में शंका प्रकट की व मैं मुड़कर उसे देखने गया, किन्तु तब वह व्यक्ति दूसरी ओर देख रहा था।

• **गाँव व डाकघर सकेतड़ी, जिला पंचकुला 134001; फोन: (0172) 2556314, 6576116**
ईमेल: mjswaraich29@gmail.com; फेसबुक: Malwinder Jit Singh Waraich

"फिर जब मैं वापस आकर आज़ाद के पास बैठा तो उन्होंने मुझसे प्रश्न किया 'क्या तुम बर्मा गए हो?' मेरे 'हां' में सिर हिलाने पर उन्होंने मुझसे पूछा, 'क्या बर्मा के रास्ते हमारे कुछ साथी हिन्दोस्तान से सुरक्षित जा सकेगें?' मैंने उन्हें बताया, 'जब मैं बर्मा गया था तो मैंने इस रास्ते को अच्छी तरह जांचा-परखा था। यह रास्ता इतना दुर्गम है कि यह खतरों से खाली नहीं है।'

"जिस समय हमारी यह चर्चा हो रही थी उसी समय थार्नहिल रोड पर म्योर कॉलेज के सामने एक व्यक्ति जाता दिखाई दिया। बातचीत का क्रम रोककर उन्होंने कहा, 'वह वीरभद्र जा रहा है। शायद उसने हमें देखा नहीं।' मैंने गर्दन घुमाकर उधर देखा, तो मुझे केवल उसकी पीठ दिखाई दी। मैंने वीरभद्र को पहले नहीं देखा था, इसलिए इस बारे में मैंने कुछ नहीं कहा... लेकिन उसकी गद्दारी के बारे में पहले ही जान चुका था।

"ये बातें हो ही रही थी कि एक कार सामने सड़क पर आकर रुकी। जिसमें से एक अंग्रेज और दो कान्स्टेबल सफेद कपड़ों में कार से उतरे। कार खड़ी होते ही हम लोगों का माथा ठनका। गोरा अफसर (नॉट बॉवर) हाथ में पिस्तौल लिए सीधा हमारी ओर आया और पिस्तौल तानकर हमसे पूछने लगा, 'Who are you? And what are you doing here?' (तुम लोग कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?)

"आज़ाद का हाथ अपनी पिस्तौल पर था और मेरा हाथ अपनी पिस्तौल पर। गोरे अफसर ने जैसे ही पूछताछ शुरू की हम दोनों ने पिस्तौल खींच ली, किन्तु गोरे अफसर की पिस्तौल से गोली पहले छूटी जो सीधी आज़ाद की जाँघ में आ लगी। आज़ाद की गोली उसके बाजू में लगी व उसकी पिस्तौल गिर गई। फिर दोनों ओर से दनादन गोलियाँ चलने लगी। इतने में एक और गोली आजाद के दायें कंधे में आ लगी, जिससे आजाद की दायीं बाजू नाकारा हो गई व उसका फेफड़ा भी जख्मी हो गया। तब आजाद ने बायें हाथ से गोली चलाई शुरू की। गोलियों की बौछार गोरा अफसर सहन न कर सका। फिर उसने दौड़कर मोलश्री के पेड़ की आड़ ले ली। उसके सिपाही कूदकर नाले में जा छिपे। पुलिस अफसर ने पेड़ के पीछे से अपनी गाड़ी की ओर भागना चाहा, जो उनके ही पीछे सड़क पर खड़ी थी, किन्तु आजाद ने फायर करके उसकी गाड़ी के टायर पंचर कर दिए।

"इधर हमने जामुन के पेड़ की आड़ ली, एक क्षण के लिए गोलीबारी रुक गई थी। उसी क्षण आज़ाद ने कहा, 'मैं जख्मी हो चुका हूं, सिराज तुम निकल जाओ।' आज़ाद के आदेश पर मैंने निकल भागने का रास्ता देखा। मैं बायीं ओर की 'समर हाऊस' वाली सड़क कह ओर भागा। सड़क पर मैंने एक लड़के को पिस्तौल दिखाई और साइकिल छीनकर मैं 'चाँद' के दफ्तर पहुँचा।"

नॉट बॉवर ने इस घटना का प्रेस को जो वक्तव्य दिया वह इस प्रकार है:-

"ठाकुर विशेशर सिंह से मुझे संदेश आया कि उसने एक व्यक्ति को अल्फ्रेड पार्क में देखा है जिसका हुलिया आज़ाद से मिलता है जो क्रान्तिकारी मफरूर है। मैं अपने साथ मोहम्मद जमान और गोविंद सिंह कॉन्स्टेबल को साथ लेता गया।

"जब हम उस जगह पहुँचे जहाँ समाचार लाने वाले (शायद वीरभद्र – लेखक) ने विशेशर सिंह को छोड़ा था तो वहाँ उन्हें विशेशर सिंह नहीं दिखाई दिया। मैंने कार दूर खड़ी कर दी और दोनों व्यक्तियों की ओर बढ़ा। मेरे पीछे कॉन्स्टेबल थे। लगभग दस गज के फासले पर खड़े होकर मैंने उनसे पूछा, "वे कौन हैं?" उत्तर में उन्होंने पिस्तौल निकालकर गोलियाँ चला दी। मेरी पिस्तौल तैयार ही थी। जैसे ही मैंने देखा कि मोटा आदमी पिस्तौल निकाल रहा है मैंने उससे गोली चलाने से क्षणभर पहले ही गोली चला दी। साथी अपनी मैग्जीन खाली कर कूदकर भाग गया। मेरे साथ जो तीन आदमी थे उन्होंने भी गोलियाँ कुछ तो मोटे आदमी पर और कुछ दूसरे आदमी पर चलाई।

"जब मैं मैगजीन निकाल कर दूसरी भर रहा था, तो मुझे मोटे व्यक्ति ने गोली मारी, जिससे मेरी मैग्जीन गिर गई जो मेरे बायें हाथ में थी। तब मैं एक पेड़ (मौलश्री) की ओर भागा जो वहाँ से दस गज पर था। सिपाही पास की खाई में जा छिपे। इसी बीच में विशेशर सिंह एक झाड़ी में रेंगकर पहुँचा । वहाँ से उसने मोटे आदमी पर गोली चलाई। जवाब में मोटे आदमी ने गोली चलाई जो विशेशर के मुँह पर लगी।

"मैं पिस्टल न भर सका। जब जब मैं दिखाई देता मोटा व्यक्ति मुझ पर गोली चलाता रहा। आखिर वह पीठ के बल गिर गया मैं नहीं कह सकता कि उस पर किसने गोली चलाई अथवा वह पहले जख्मों से मर गया। इस बीच

लोग जमा हो गए। मैं नहीं जानता था कि मोटा आदमी सचमुच मरा पड़ा था; उसका साथी भाग गया। मुझे मालूम नहीं कि वह घायल हुआ भी था या नहीं।"

सरकारी रिपोर्ट अनुसार – "इसके बाद एक अन्य पुलिस अफसर बड़ी संख्या में पुलिस साथ लेकर वहां पहुंचा, जिसने आजाद की पिछली ओर से गोलियां चलाईं। आजाद की गोली से वह अफसर भी घायल हो गया। कुछ देर बाद अचानक आजाद की ओर से फायरिंग बन्द हो गई। पुलिस ने देखा कि आजाद पीछे की ओर गिर गया है, किन्तु फिर भी पुलिस वालों की आजाद की ओर बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रही कि कहीं वह जीवित ही न हो। उन्होंने अपनी शंका को मिटाने के लिए एक बन्दूक से उसके पैरों पर फायर किए, जिस पर आजाद के उसी तरह पड़े रहने पर उनको यकीन हो गया कि सचमुच ही आजाद की मौत हो चुकी है।"

सी.आई.डी. सुपरिंटेंडेंट, जो 'चाँद' प्रेस में तलाशी लेने आए थे ने सहगल जी से आज़ाद के जीवन की प्रशंसा की। उनका कहना था कि ऐसे पक्के निशानेबाज उन्होंने बहुत कम देखे हैं, खासकर ऐसी शंकामय परिस्थिति में जब तीन ओर से उन पर गोलियों की वर्षा हो रही थी। **उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि पहली गोली उनकी जाँघ में न लगी होती तो पुलिस का एक भी अफसर जीवित न बचता, क्योंकि नॉट बॉवर का हाथ पहले ही बेकार हो चुका था। उन्होंने यह भी बताया था कि आज़ाद विप्लवी दल का कोई प्रतिष्ठित नेता था।**

"जालिम फलक ने लाख मिटाने की फिक्र की
हर दिन में अक्स रह गया तस्वीर रह गई।
'हे अमर बलिदानी तुझे शत् शत् प्रणाम।'"

क्या आजाद ने खुद बची हुई आखिरी गोली अपनी दायीं पुड़पुड़ी पर चलाई थी?

यह धारणा शायद इस करके प्रचलित हो गई होगी, क्योंकि आजाद का वचन था – मैं जीवित पुलिस के हाथ में नहीं आऊंगा – जो बिल्कुल सही साबित हुई, तथा निम्नलिखित तथ्यों के मद्देनजर यह धारणा अब समाप्त हो जानी चाहिए:

(1) शहीदी के बाद की गई पोस्ट मॉरटम रिपोर्ट के अनुसार आजाद के शरीर में दो घातक घाव – भाव फेफड़े व पुड़पुड़ी वाले घाव, दूर से किए गए फायर से हुए हैं। उन्होंने तथ्यों सहित स्पष्ट किया है कि पिस्तौल या बन्दूक की नाली, फायर के समय शरीर को लगे तो त्वचा के बाल जल जाते हैं तथा त्वचा का रंग बिल्कुल काला पड़ जाता है, जबकि आजाद की त्वचा बिल्कुल साधारण अवस्था में ही थी।

(2) जैसा कि सुखदेवराज ने बताया है कि दायें कंधे पर गोली लगने के कारण आजाद का दायीं बाजू नाकारा हो गई थी एवं उसने बायें हाथ से मोर्चा संभाला था। इसलिए दायीं पुड़पुड़ी पर फायर स्वयं तो दायें हाथ से ही हो सकता था न कि बायें हाथ से, जबकि आजाद की दायीं बाजू गोलीबारी तुरन्त बाद ही नाकारा हो गई थी।

(3) शहीदी के बाद मौके पर आजाद की तलाशी के दौरान उसके पास से खाली कारतूसों के अतिरिक्त 16 अनचले कारतूस भी मिले थे, जो कि मौके पर लिखी गई सरकारी रिपोर्ट में भी दर्ज हैं।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम यकीन से कह सकते हैं कि यह सूरमा अपनी आखिरी सांस तक पुलिस की गोली का जवाब गोली के साथ देता ही शहीद हुआ था – **"दुश्मनों की गोलियों का सामना करेगें, आज़ाद हैं आज़ाद ही रहेंगे।"**

.....